Join Telegram- https://t.me/bhartibhandar
Our Website- https://thehindipage.com/blog/
Join Telegram- https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 1 संतवाणी

(अ) कबीर

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर भक्तिकाल के महान समाज सुधारकथे। कबीर दास जी का जन्म 1398 ई. में काशी में हुआ । उनका लालन-पालन नीमा और नीरू नामक एक जुलाहा दंपत्ति ने किया । उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत, धार्मिक आडम्बर, ऊँच-नीच एवं बहुदेववाद का कड़ा विरोध करते हुए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु के मूल्यों को स्थापित किया। कबीर की प्रतिभा में अबाध गति व तेज था। उन्हें पहले समाज-सुधारक बाद में कवि कहा जाता है। भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को **वाणी का डिक्टेटर** कहा है। कबीरदास जी की भाषा में अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द मिले हुए थे इसलिए विद्वानों ने उनकी भाषा को **सधुक्कड़ी भाषा** या **पंचमेल खिचड़ी** भी कहा है ।कवि ने अपनी सपाटबयानी एवं तटस्थता से समाज-सुधार के लिए जो उपदेश दिए उनका **संकलन** उनके शिष्य **धर्मदास** ने किया।

कबीर की रचनाओं के संकलन को **बीजक** कहा जाता है। **बीजक के तीन भागसाखी, सबद और रमैनी** हैं।। संत काव्य परम्परा में उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। 1528 ई. में कबीर की मृत्यु हो गयी।

प्रश्न 1.'असा साँपनी' की औषधि है-

(अ) माया

(ब) सुख

(स) सम्पदा

(द) सन्तोष

उत्तर:(द)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.हंस के उदाहरण से कवि क्या शिक्षा देना चाहता है?

उत्तर:हंस के माध्यम से कवि शिक्षा देना चाहता है कि मनुष्य को हंस की तरह विवेकी बन करगुणोंको ग्रहण करना चाहिएऔरअवगुणोंकोत्यागदेनाचाहिए।

प्रश्न 2."मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यानसे क्या तात्पर्य है?

उत्तर:इस कथन का तात्पर्य यह है कि साधु की श्रेष्ठता उसकी जाति से नहीं अपितु उसके ज्ञान आदि से आँकी जानी चाहिए।

प्रश्न 3.कबीरदास ने संगति का क्या प्रभाव बताया है?

उत्तर: कबीर के अनुसार सत्संगति से मनुष्य जीवन सार्थक हो सकता है। जैसेलोहा पारस की संगति से सोना बन जाता है।

लघुउत्तरीयप्रश्न

प्रश्न 1.जगत् को वश में करने का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर:जगत् को वश में करने के लिए कबीरदास जी ने मीठीवाणी को सबसे उपयुक्त उपाय बताया है। मधुर और विनम्र वाणी से बहुत सरलता से किसी को भी बस में किया जा सकता है। जैसे कोयल अपनी मीठी वाणी के कारण सबकी पिए होती है , जबकि कौवा अपनी कर्कश वाणी के कारण किसी को अच्छा नहीं लगता है।

प्रश्न 2.कबीरदास की वाणी 'साखी' क्यों कहलाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर'साखी' शब्द संस्कृत के 'साक्षी' का ही परिवर्तित या तद्भव रूप है।'साक्षी' का अर्थ होता है 'प्रत्यक्षदर्शी' या गवाह। 'साखी' नाम से रचित दोहों में कबीरदास जी द्वारा अपने स्वयं के अनुभव से प्राप्त विचारों, शिक्षाओं और सन्देशों को व्यक्त किया गया है। अत: कबीरदास के आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित होने के कारण, इन दोहों को 'साखी' नाम दिया गया है।

प्रश्न 3."जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥"

पंक्तियों को भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रस्तुत साखी में कबीरदास साधु की परख उसकी जाति से नहीं बल्कि उसके ज्ञान के आधार पर करने का करनी चाहिए। साधु यदि ज्ञानी और सदाचारी है तो उसकी कोई भी जाति हो, वह सम्मान का पात्र है, तलवार की गुणवत्ता का मूल्य होता है बयान तो केवल बाहरी आवरण है उसका कोई मोल नहीं होता है । कबीर का आशय यह है कि जाति के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन करना अज्ञान की निशानी है।

संकलित दोहों की सप्रसंग व्याख्याएँ

1 तो ऐसा कीजिए, सब कुछ एकहि बार।

सब प्रभु का मेरा नहीं, निहचे किया विचार॥

कठिन शब्दार्थ- निहचे = निश्चय॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कवि त्याग के आदर्श स्वरूप और महत्त्व बता रहे हैं।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि मनुष्य को एक बार दृढ़ निश्चय करके अपना सब कुछ त्याग देना चाहिए। उसकी यह भावना होनी चाहिए कि उसे प्राप्त सारी वस्तुएँ और उसका शरीर भी सब कुछ ईश्वर का है। ईश्वर को सर्वस्व समर्पण करके मोह और अहंकार से मुक्त हो जाना ही आदर्श त्याग है।

विशेष-

(i) 'मैं और मेरा' की भावना का त्याग ही मनुष्य को महान् बनाता है, यह संकेत है।

(ii) 'सब कुछ ईश्वर का है' यह विचार रखने वाला ही सच्चा त्यागी बन सकता है। यह सन्देश व्यक्त हुआ है।

(iii) भाषा सरल और शैली उपदेशात्मक है।

2. सुनिए गुण की बारती, औगुन लीजै नाहिं।

हंस छीर को गहत है, नीर सो त्यागे जाहिं॥

कठिन शब्दार्थ - बारता = बात, महत्व। औगुन = अवगुण, बुराइयाँ। लीजै = लीजिए। छोर = दूध (गुण)। नीर = जल (अवगुण)॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कबीरदास जी लोगों के गुणों को ग्रहण करने और अवगुणों का परित्याग करने का सन्देश दे रहे हैं।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य को गुणों की बातें ही सुननी चाहिए अर्थात गुणों को ग्रहण करना चाहिए और अवगुणों को त्याग देना चाहिए। जैसे हंस दूध और जल के मिश्रण में से दूध को ग्रहण करके जल को त्याग देता है, उसी प्रकार मनुष्य को गुणों को ग्रहण करते हुए अवगुणों को त्याग देना चाहिए।

विशेष-

(i) हंस की तरह मनुष्य को भी 'नीर क्षीर विवेक' रखना चाहिए।

(ii) भाषा सरल है। शैली उपदेशात्मक है।

(iii) दृष्टान्त अलंकार का प्रयोग हुआ है।

3. छोड़े जब अभिमान को, सुखी भयो सब जीव।

भावै कोई कछु कहै, मेरे हिय निज पीव॥

कठिन शब्दार्थ- अभिमान = अहंकार। भया = हुआ। जीव = प्राण, आत्मा। भावै = अच्छा लगे। हिय = हृदय में। निज = अपने। पीव = प्रिय, ईश्वर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कबीरदास सच्चा सुख और परमात्मा की प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग करना आवश्यक बताया है।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने मन से अभिमान को निकाल देता है तो उसका मन परम आनंद की प्राप्ति करता है और वह सुखी हो जाता है। कवि कहते हैं कि भले ही मुझे इसके लिए कोई कुछ भी कहे, मैंने अपने मन से अभिमान को निकाल दिया है। अब मेरे हृदय में मेरे प्रियतम अर्थात मेरे प्रभु मुझे प्राप्त हो गए हैं।

विशेष-

(i) अहंकार के रहते जीव स्वयं को परमात्मा से भिन्न समझता है और दु:खी रहता है। अहंकार का त्याग करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है।

(ii) आत्मा और परमात्मा एक है।

(iii) भाषा सरल है, शैली भावात्मक है॥

(iv) 'कोई कछु कहै' में अनुप्रास अलंकार है।

SIDDHI VINAYAK ONLINE CLASS

4.जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

कठिन शब्दार्थ-मोल करो = मूल्य लगाओ, मूल्यांकन करो। म्यान = तलवार को रखने का खोल, कोष।

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कबीर के साधु की श्रेष्ठता का मानदण्ड उसके ज्ञान को माना है, न कि उसकी जाति को।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि साधु पुरुष अर्थात सज्जन व्यक्ति की सज्जनता के लिए उस की जाति पूछने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसके गुणों की परख करने की आवश्यकता है साधु से उसकी जाति पूछकर उसका मूल्यांकन करना साधुता का अपमान है। साधु की श्रेष्ठता और उसका सम्मान उसके ज्ञान के आधार पर किया जाना चाहिए। जैसे वीर पुरुष तलवार की म्यान को महत्व नहीं देता बल्कि वह तलवार को महत्त्व देते हैं। उसके गुणों की परख करते हैं वैसे ही साधु पुरुष के गुणों की ही परख होनी चाहिए न की उसकी जाति की।

विशेष-

(i) कवि ने साधुता का मूल्यांकन ज्ञान अर्थात् विचार, आचरण और आध्यात्मिक योग्यता के आधार पर किए जाने का सन्देश देकर जातिवाद और अंधविश्वास पर तीखा व्यंग्य किया है।

(ii) कबीर को जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धर्म-सम्प्रदाय के आधार पर मनुष्यों में भेदभाव स्वीकार नहीं था। यह इस साखी से प्रमाणित हो रहा है।

(iii) भाषा सरल तथा मिश्रित शब्दावली युक्त है।

5.संगत कीजै साधु की, कभी न निष्फल होय।

लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय॥

कठिन शब्दार्थ -साधु = सज्जन, सन्त। निष्फल = व्यर्थ, बेकार। पारस = एक कल्पित पत्थर या मणि जिसके छू जाने से लोहा सोना हो जाता है। परस = स्पर्श, छूना। सो = वह। कंचन = सोना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इसमें कबीर सत्संगति की महिमा का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या- सत्संगति की महिमा का बखान करते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि हमें साधु पुरुष अर्थात सज्जन व्यक्ति की संगति करनी चाहिए। इससे हम कभी भी निष्फल नहीं होते हैं। जिस तरह से लोहा पारस पत्थर को छूते ही सोना बन जाता है, वैसे ही अज्ञानी पुरुष भी साधु या सज्जन व्यक्ति के सानिध्य में रहकर गुणवान बन जाता है।

विशेष-

(i) पारस और लोहे के उदाहरण द्वारा कवि ने सत्संग या साधु-संगति के चमत्कारी परिणाम की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

(ii) भाषा सरल और शैली उपदेशात्मक है।

(iii) दोहे में उदाहरण अलंकार है।

6.मारिये आसा सांपनी, जिन डसिया संसार॥

ताकी औषध तोष है, ये गुरु मंत्र विचार॥

कठिन शब्दार्थ - मारिये = मार डालिए, त्याग कर दीजिए। सांपनी = सर्पिणी। डसिया = डसा है, वश में कर रखा है। ताकी = उसकी। औषध = दवा, उपचार। तोष = सन्तोष। गुरु मंत्र = गुरु की शिक्षा, अचूक उपाय॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कवि ने 'आशा' को सर्पिणी के समान बताते हुए उससे बचने का उपाय संतोष और गुरु उपदेश को बताया है।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि कबीर दास जी मनुष्य की अनंत इच्छाओं की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि इस आशा रूपी नागिन ने सारे संसार को डस रखा है। अर्थात मन में उठने वाली अनेकानेक आशाएं नागिन के समान है और उसने प्रत्येक मनुष्य को डस लिया है, इस आशा रूपी नागिन से बचने का केवल संतोष या आत्म संतुष्टि उपाय है। यही गुरु का श्रेष्ठ मंत्र है। इसी से आशा रूपी नागिन से बचा जा सकता है।

विशेष-

(i) 'सन्तोषी सदा सुखी' इस लोकोक्ति का इस साखी में समर्थन किया गया है।

(ii) भाषा सरल है, शैली आलंकारिक है। 'गुरुमंत्र' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

(iii) आसा सांपनी' में रूपक अलंकार है।

7.कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।

मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत॥

कठिन शब्दार्थ-कागो = कौआ। काको = किसका। हरै = हरण कर लेता है, छीन लेता है। काको = किसे। शब्द = बोली। सुनाय के = सुनाकर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कबीर मधुरवाणी का महत्त्व और प्रभाव बता रहे हैं।

व्याख्या- कबीर दास जी कहते हैं कि कौवा किसी का धन नहीं लेता है और ना ही कोयल किसी को धन दे देती है, लेकिन फिर भी कोयल सभी को प्रिय होती है और कौवा किसी को प्रिय नहीं लगता है। इसका कारण कवि ने दोनों की वाणी को बताया है। कौवा कर्कश वाणी में बोलता है इसलिए वह सभी का अप्रिय होता है। जबकि कोयल मधुर वाणी में बोलती है इसलिए वह सारे संसार को अपना बना लेती है। यह केवल वाणी का अन्तर है। कौए की कर्कश काँव-काँव किसी को अच्छी नहीं लगती परन्तु कोयल अपनी मधुर वाणी से सारे जगत् की प्यारी बनी हुई है।

विशेष-

(i) सबका प्रिय बनना है तो कटु और अप्रिय मत बोलो। सदा मधुर वाणी का प्रयोग करो। यही सन्देश इस साखी के माध्यम से दिया गया है।

(ii) भाषा सरल है, शैली अन्योक्तिपरक है।

(iii) साखी में अनुप्रास तथा अन्योक्ति अलंकार है।

SIDDHI VINAYAK ONLINE CLASS